सपनालू

मार्टिन और

एक आदमी था। वह हमेशा सपने देखा करता था। तो उसे सपनालू कहें? उसे लगता रहता – कोई तो तरीका होगा जिससे दस हज़ार मील दूर की चीज़ें देखी जा सकें! कभी वह सोचता – कोई न कोई तरीका तो होगा ही जिससे सूप को भी काँटे से खाया जा सके! कभी गुनता कि क्या ऐसा नहीं हो सकता कि लोग सिर के बल चल पाएँ! उसे यकीन था कि कोई ऐसा तरीका तो ज़रूर होगा कि लोग निडर होकर जी सकें।

जब वह ऐसे सपने देखता तो लोग उससे कहा करते, "जनाब, ऐसा कुछ नहीं हो सकता!"

"तुम सपनालू हो! अरे बन्धु! आँखें खोलो और असलियत स्वीकार करो।" और फिर लोग यह भी कहते, "ये तो कुदरत के नियम हैं तुम इन्हें नहीं बदल सकते!"

सपनालू कहता, "पता नहीं! पर, कोई न कोई तरीका तो होगा जिससे पानी के अन्दर भी साँस ली जा सके! कोई तरीका ज़रूर होगा जिससे सब के सब लोगों को खाना मिल सके! कोई तरीका होगा जिससे लोग वह सब जान सकें जो वे जानना चाहते हैं!"

सपनालू कैसे मानता कि एक भी तरीका नहीं है जिससे कि हम अपने पेट के भीतर नहीं देख सकें!

चित्र - कनक

और लोग कहते रहते, "सपनालू जी, सँभालो भाई, खुद को सँभालो! अरे, भला ऐसा कहीं होता है क्या? तुम कुछ भी चाहो और फिर उम्मीद करो कि वह सचमुच हो जाए। अब भई, दुनिया तो ठहरी दुनिया जैसी!"

फिर टेलीविज़न आया और एक्स-रे मशीन बनी। आदमी सैकड़ों मील दूर का देख पाने लगा। वह अपने पेट के भीतर भी देख पाने लगा...पर तब किसी ने नहीं कहा, "सपनालू, तुम सही कहते थे यार!" और फिर किसी ने एक पोशाक भी बना दी जिसे पहनकर पानी में आराम से साँस ली जा सकती है।

सपनालू ने सोचा, "यही तो सोचा था मैंने! शायद कभी वह दिन भी आए जब लोग बिना युद्ध के मिल-जुलकर रहेंगे!"

(द स्ट्रेंज वॉर से साभार)